



Adity kumar

03 Oct 1996

04:30 PM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121033301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 03/10/1996
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 16:30:00 घंटे
इष्ट _____: 27:01:59 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:41:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:10:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:31:03 घंटे
सूर्योदय _____: 05:41:12 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:33:49 घंटे
दिनमान _____: 11:52:37 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 16:41:48 कन्या
लग्न के अंश _____: 26:30:11 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: मृगशिरा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: वरियान
करण _____: बव
गण _____: देव
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: की-किशोर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	आश्विन	11
पंजाबी	संवत : 2053	आश्विन	18
बंगाली	सन् : 1403	आश्विन	17
तमिल	संवत : 2053	पुरुटासी	18
केरल	कोल्लम : 1172	कन्नी	17
नेपाली	संवत : 2053	आश्विन	18
चैत्रादि	संवत : 2053	आश्विन	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2053	भाद्रपद	कृष्ण 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 28:35:48
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:40:42 घंटे
जन्म योग _____ : मृगशिरा
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्यतिपात
योग समाप्ति काल _____ : 07:20:01 घंटे
जन्म योग _____ : वरियान
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 15:45:25 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 56:44:47
भभोग _____ : 64:41:32
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 0 वर्ष 10 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

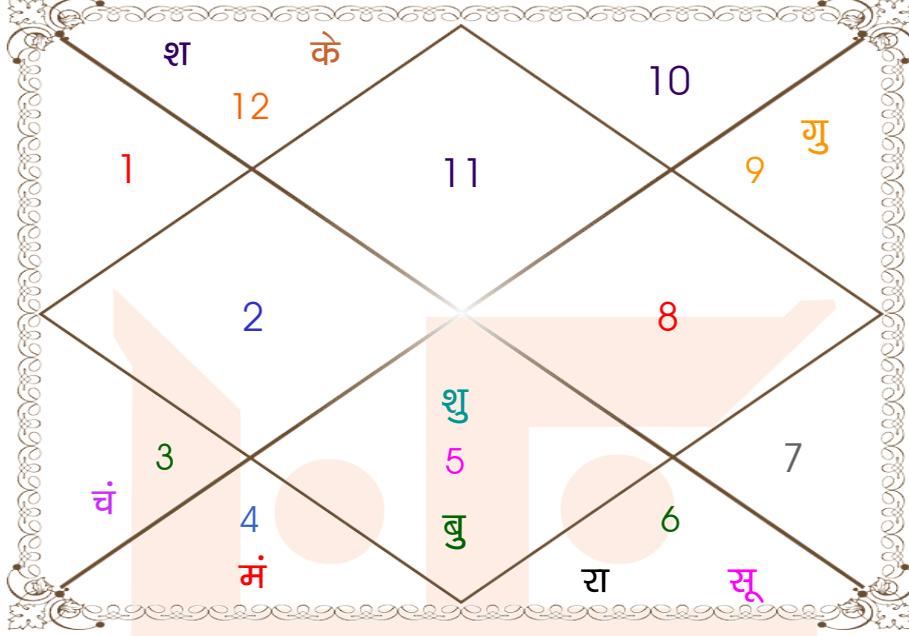
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

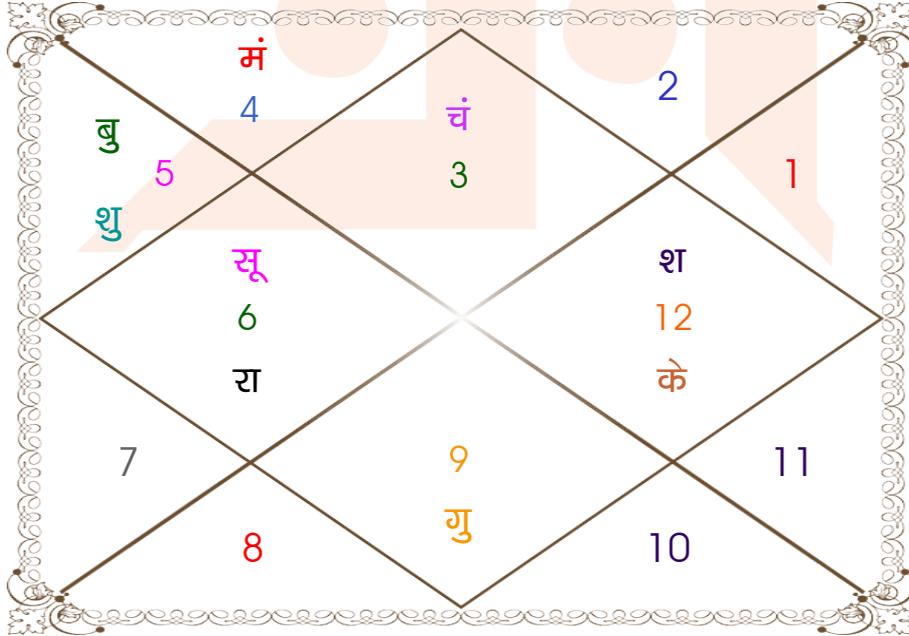
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के श		चं
ल		मं
		शु बु
गु		रा सू

लग्न कुंडली

चं	के श	ल
मं		
शु बु		गु
रा सू		

विंशोत्तरी
मंगल 0वर्ष 10मा 6दि
मंगल

03/10/1996

11/08/2110

मंगल	10/08/1997
राहु	11/08/2015
गुरु	11/08/2031
शनि	10/08/2050
बुध	11/08/2067
केतु	10/08/2074
शुक्र	10/08/2094
सूर्य	11/08/2100
चन्द्र	11/08/2110

योगिनी

संकटा 0वर्ष 11मा 20दि
संकटा

23/09/2025

23/09/2033

संकटा	05/07/2027
मंगला	24/09/2027
पिंगला	04/03/2028
धान्या	03/11/2028
भामरी	23/09/2029
भद्रिका	03/11/2030
उल्का	04/03/2032
सिद्धा	23/09/2033

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

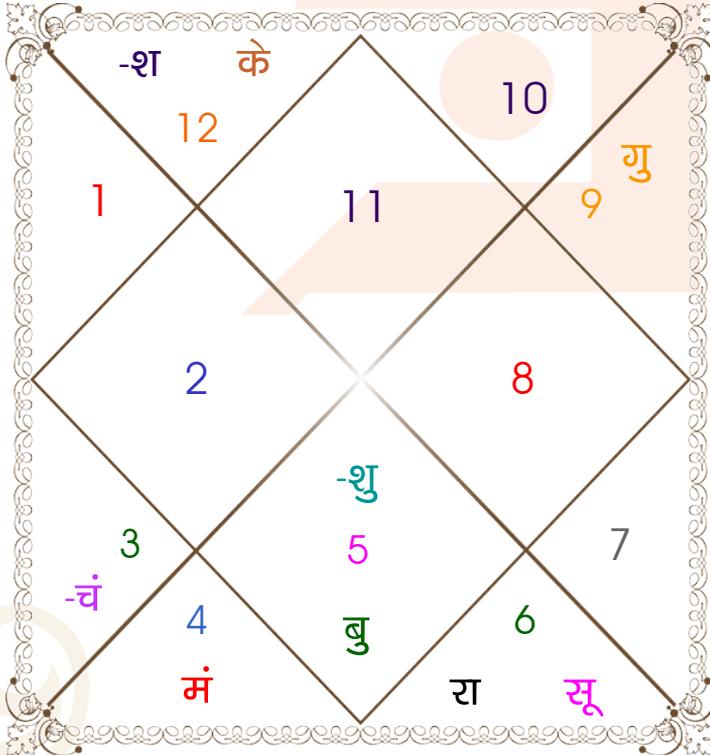
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	26:30:11	480:50:02	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	केतु	---
सूर्य			कन्या	16:41:48	00:59:05	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	सम राशि
चंद्र			मिथु	05:02:45	12:15:21	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
मंगल			कर्क	20:40:21	00:35:54	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	नीच राशि
बुध			सिंह	28:50:03	01:01:20	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	मंगल	मित्र राशि
गुरु			धनु	15:23:28	00:05:25	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
शुक्र			सिंह	05:24:02	01:09:14	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	09:38:11	00:04:38	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कन्या	14:10:56	00:00:19	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	14:10:56	00:00:19	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष	व		मक	06:50:52	00:00:20	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मक	01:10:02	00:00:06	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
प्लूटो			वृश्चि	07:18:38	00:01:41	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	29:32:29	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शनि	--

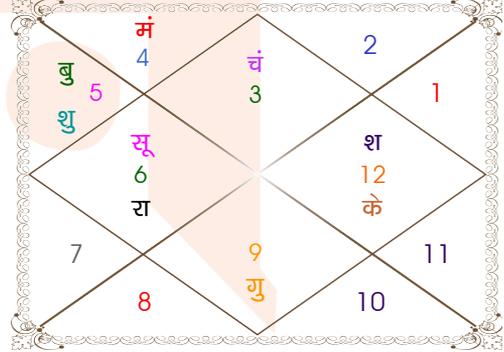
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:44

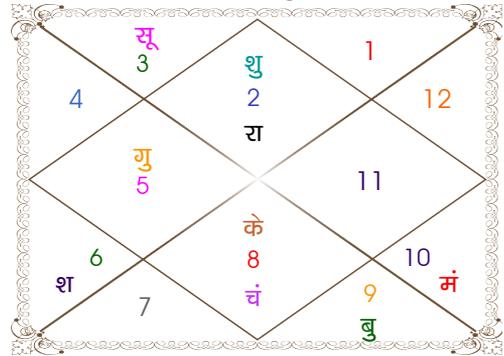
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 12:00:34	कुम्भ 26:30:11
2	मीन 12:00:34	मीन 27:30:57
3	मेष 13:01:20	मेष 28:31:43
4	वृष 14:02:06	वृष 29:32:29
5	मिथुन 14:02:06	मिथुन 28:31:43
6	कर्क 13:01:20	कर्क 27:30:57
7	सिंह 12:00:34	सिंह 26:30:11
8	कन्या 12:00:34	कन्या 27:30:57
9	तुला 13:01:20	तुला 28:31:43
10	वृश्चिक 14:02:06	वृश्चिक 29:32:29
11	धनु 14:02:06	धनु 28:31:43
12	मकर 13:01:20	मकर 27:30:57

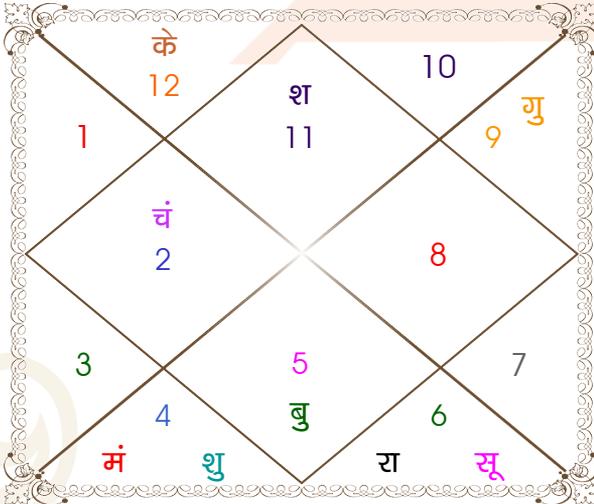
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	26:30:11
2	मेष	04:04:03
3	वृष	04:10:37
4	वृष	29:32:29
5	मिथुन	24:03:48
6	कर्क	21:40:55
7	सिंह	26:30:11
8	तुला	04:04:03
9	वृश्चिक	04:10:37
10	वृश्चिक	29:32:29
11	धनु	24:03:48
12	मकर	21:40:55

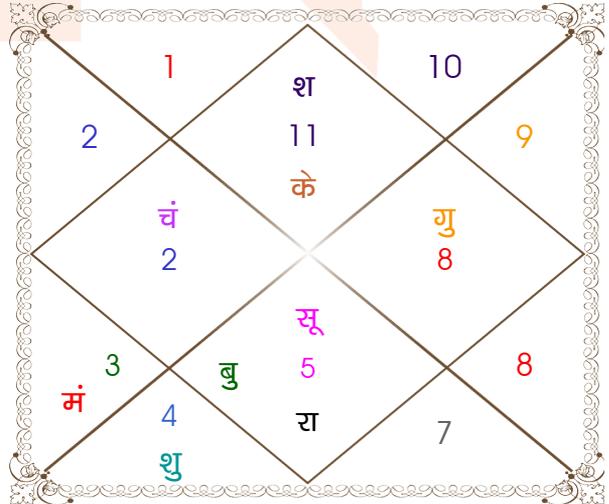
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 10 मास 6 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
03/10/1996	10/08/1997	11/08/2015	11/08/2031	10/08/2050
10/08/1997	11/08/2015	11/08/2031	10/08/2050	11/08/2067
00/00/0000	राहु 22/04/2000	गुरु 28/09/2017	शनि 13/08/2034	बुध 06/01/2053
00/00/0000	गुरु 16/09/2002	शनि 10/04/2020	बुध 22/04/2037	केतु 03/01/2054
00/00/0000	शनि 23/07/2005	बुध 17/07/2022	केतु 01/06/2038	शुक्र 03/11/2056
00/00/0000	बुध 09/02/2008	केतु 23/06/2023	शुक्र 01/08/2041	सूर्य 09/09/2057
00/00/0000	केतु 27/02/2009	शुक्र 21/02/2026	सूर्य 14/07/2042	चंद्र 09/02/2059
00/00/0000	शुक्र 27/02/2012	सूर्य 10/12/2026	चंद्र 12/02/2044	मंगल 06/02/2060
03/10/1996	सूर्य 21/01/2013	चंद्र 10/04/2028	मंगल 23/03/2045	राहु 25/08/2062
सूर्य 09/01/1997	चंद्र 23/07/2014	मंगल 17/03/2029	राहु 28/01/2048	गुरु 30/11/2064
चंद्र 10/08/1997	मंगल 11/08/2015	राहु 11/08/2031	गुरु 10/08/2050	शनि 11/08/2067

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
11/08/2067	10/08/2074	10/08/2094	11/08/2100	11/08/2110
10/08/2074	10/08/2094	11/08/2100	11/08/2110	00/00/0000
केतु 07/01/2068	शुक्र 10/12/2077	सूर्य 28/11/2094	चंद्र 11/06/2101	मंगल 07/01/2111
शुक्र 08/03/2069	सूर्य 10/12/2078	चंद्र 29/05/2095	मंगल 10/01/2102	राहु 26/01/2112
सूर्य 14/07/2069	चंद्र 10/08/2080	मंगल 04/10/2095	राहु 12/07/2103	गुरु 01/01/2113
चंद्र 12/02/2070	मंगल 10/10/2081	राहु 28/08/2096	गुरु 10/11/2104	शनि 10/02/2114
मंगल 11/07/2070	राहु 10/10/2084	गुरु 16/06/2097	शनि 11/06/2106	बुध 07/02/2115
राहु 29/07/2071	गुरु 11/06/2087	शनि 29/05/2098	बुध 11/11/2107	केतु 06/07/2115
गुरु 04/07/2072	शनि 10/08/2090	बुध 05/04/2099	केतु 11/06/2108	शुक्र 04/09/2116
शनि 13/08/2073	बुध 10/06/2093	केतु 11/08/2099	शुक्र 10/02/2110	सूर्य 04/10/2116
बुध 10/08/2074	केतु 10/08/2094	शुक्र 11/08/2100	सूर्य 11/08/2110	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 10 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र 23/06/2023 21/02/2026	गुरु - सूर्य 21/02/2026 10/12/2026	गुरु - चंद्र 10/12/2026 10/04/2028	गुरु - मंगल 10/04/2028 17/03/2029	गुरु - राहु 17/03/2029 11/08/2031
शुक्र 02/12/2023 सूर्य 20/01/2024 चंद्र 10/04/2024 मंगल 06/06/2024 राहु 30/10/2024 गुरु 09/03/2025 शनि 10/08/2025 बुध 26/12/2025 केतु 21/02/2026	सूर्य 07/03/2026 चंद्र 01/04/2026 मंगल 18/04/2026 राहु 01/06/2026 गुरु 10/07/2026 शनि 25/08/2026 बुध 05/10/2026 केतु 22/10/2026 शुक्र 10/12/2026	चंद्र 20/01/2027 मंगल 17/02/2027 राहु 01/05/2027 गुरु 05/07/2027 शनि 20/09/2027 बुध 28/11/2027 केतु 26/12/2027 शुक्र 17/03/2028 सूर्य 10/04/2028	मंगल 30/04/2028 राहु 20/06/2028 गुरु 04/08/2028 शनि 27/09/2028 बुध 15/11/2028 केतु 05/12/2028 शुक्र 30/01/2029 सूर्य 17/02/2029 चंद्र 17/03/2029	राहु 26/07/2029 गुरु 20/11/2029 शनि 08/04/2030 बुध 10/08/2030 केतु 30/09/2030 शुक्र 23/02/2031 सूर्य 08/04/2031 चंद्र 20/06/2031 मंगल 11/08/2031
शनि - शनि 11/08/2031 13/08/2034	शनि - बुध 13/08/2034 22/04/2037	शनि - केतु 22/04/2037 01/06/2038	शनि - शुक्र 01/06/2038 01/08/2041	शनि - सूर्य 01/08/2041 14/07/2042
शनि 31/01/2032 बुध 05/07/2032 केतु 07/09/2032 शुक्र 09/03/2033 सूर्य 03/05/2033 चंद्र 03/08/2033 मंगल 06/10/2033 राहु 20/03/2034 गुरु 13/08/2034	बुध 31/12/2034 केतु 26/02/2035 शुक्र 09/08/2035 सूर्य 27/09/2035 चंद्र 18/12/2035 मंगल 13/02/2036 राहु 10/07/2036 गुरु 18/11/2036 शनि 22/04/2037	केतु 16/05/2037 शुक्र 23/07/2037 सूर्य 12/08/2037 चंद्र 14/09/2037 मंगल 08/10/2037 राहु 08/12/2037 गुरु 31/01/2038 शनि 05/04/2038 बुध 01/06/2038	शुक्र 11/12/2038 सूर्य 07/02/2039 चंद्र 14/05/2039 मंगल 21/07/2039 राहु 10/01/2040 गुरु 12/06/2040 शनि 13/12/2040 बुध 25/05/2041 केतु 01/08/2041	सूर्य 18/08/2041 चंद्र 16/09/2041 मंगल 06/10/2041 राहु 27/11/2041 गुरु 13/01/2042 शनि 09/03/2042 बुध 27/04/2042 केतु 17/05/2042 शुक्र 14/07/2042
शनि - चंद्र 14/07/2042 12/02/2044	शनि - मंगल 12/02/2044 23/03/2045	शनि - राहु 23/03/2045 28/01/2048	शनि - गुरु 28/01/2048 10/08/2050	बुध - बुध 10/08/2050 06/01/2053
चंद्र 31/08/2042 मंगल 04/10/2042 राहु 30/12/2042 गुरु 17/03/2043 शनि 16/06/2043 बुध 06/09/2043 केतु 10/10/2043 शुक्र 14/01/2044 सूर्य 12/02/2044	मंगल 07/03/2044 राहु 07/05/2044 गुरु 29/06/2044 शनि 02/09/2044 बुध 29/10/2044 केतु 22/11/2044 शुक्र 28/01/2045 सूर्य 17/02/2045 चंद्र 23/03/2045	राहु 26/08/2045 गुरु 12/01/2046 शनि 26/06/2046 बुध 20/11/2046 केतु 20/01/2047 शुक्र 12/07/2047 सूर्य 02/09/2047 चंद्र 28/11/2047 मंगल 28/01/2048	गुरु 30/05/2048 शनि 24/10/2048 बुध 04/03/2049 केतु 27/04/2049 शुक्र 28/09/2049 सूर्य 13/11/2049 चंद्र 29/01/2050 मंगल 24/03/2050 राहु 10/08/2050	बुध 13/12/2050 केतु 02/02/2051 शुक्र 29/06/2051 सूर्य 12/08/2051 चंद्र 24/10/2051 मंगल 14/12/2051 राहु 24/04/2052 गुरु 20/08/2052 शनि 06/01/2053

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 2
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

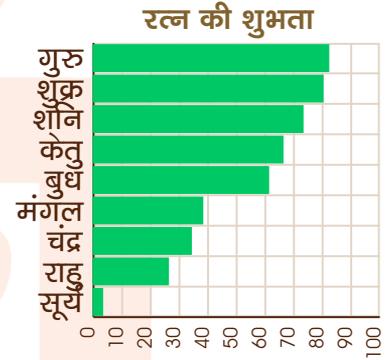
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	82%	धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	80%	दम्पति, सुख, भाग्योदय
नीलम	शनि	73%	धन, कम खर्च, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	66%	धन, धनार्जन
पन्ना	बुध	61%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मूंगा	मंगल	38%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, व्यावसायिक हानि
मोती	चंद्र	34%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	26%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	3%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	10/08/1997	16%	47%	56%	47%	89%	80%	73%	1%	72%
राहु	11/08/2015	0%	9%	12%	61%	82%	86%	80%	50%	53%
गुरु	11/08/2031	16%	47%	50%	47%	95%	67%	73%	26%	66%
शनि	10/08/2050	0%	9%	12%	67%	82%	86%	86%	38%	53%
बुध	11/08/2067	16%	9%	38%	73%	82%	86%	73%	26%	66%
केतु	10/08/2074	0%	9%	50%	61%	82%	86%	61%	1%	78%
शुक्र	10/08/2094	0%	9%	38%	67%	82%	92%	80%	38%	72%
सूर्य	11/08/2100	28%	47%	50%	61%	89%	67%	61%	1%	53%
चंद्र	11/08/2110	16%	55%	38%	67%	82%	80%	73%	1%	53%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराकम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मंगल

छटेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छटे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(11/08/2015 - 11/08/2031)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 11/08/2015 शुरु तथा 11/08/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात् आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएँगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात् जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपकी ज्ञान की खोज के प्रति रुचि रहेगी।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(23/06/2023 - 21/02/2026)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 11/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/06/2023 को प्रारंभ होकर 21/02/2026 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह हो सकता है। जीवनसाथी से खुशियां मिलेंगी, उनसे धन का लाभ हो सकता है। आकर्षक और मधुर व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध होंगे। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज की अदायगी कर सकेंगे। नेकी के कार्य करेंगे। भाग्य साथ देगा। कला में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता सफल होंगे, उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता धनी बनेंगी; वाहन और अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, संतान से खुशी, उत्तम शिक्षा, कला में रुचि, यात्रा, धन, सुख-साधन, अध्यात्म और धर्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान की कला में रुचि होगी; वे प्रसिद्ध और सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सफलता आसानी से मिल जाएगी, यात्रा होगी, विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। परामर्शदाता और व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(21/02/2026 - 10/12/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 11/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/02/2026 को प्रारंभ होकर 10/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। विरासत, बीमा, ग्रेच्युटी, बोनस आदि से लाभ हो सकता है। सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी। वाक्शक्ति उत्तम होगी। धन पर्याप्त रहेगा, सरकार से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी होंगे; उन्हें पिता से लाभ होगा। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं; खर्च बढ़ेंगे। माता को उच्चपद मिल सकता है, धनी बनेंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उच्चपद, कार्यक्षेत्र में सफलता का संकेत है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजय होगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी, संचार माध्यम और विज्ञापन जगत से लाभ होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कई माध्यमों से धनागम होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का 40 दिन तक पाठ करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(10/12/2026 - 10/04/2028)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 11/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 10/12/2026 को आरंभ होकर 10/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आप संतुष्ट और शांत रहेंगे। धर्म में रुचि होगी। कल्पनाशक्ति और सर्जनात्मक क्षमता उत्तम होंगी। सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। धनार्जन उत्तम होगा। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी के लिए सफलता, धन और लाभ का योग है। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे। माता को धन का लाभ होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, आपके भाई-बहनों के लिए कला और साहित्य में सफलता, साझेदारी से लाभ, सुखी विवाहित जीवन का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, खुश रहेंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली उदर रोग हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चांदी, जल और दूध दान में दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(10/04/2028 - 17/03/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 11/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/04/2028 को प्रारंभ होकर वद 17/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382
9835195382

साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप बली और तीव्रता से निर्णय करने वाले होंगे। धन और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। सहकर्मियों से मतभेद हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। स्वास्थ्य और रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। कार्यक्षमता उत्तम होगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा, सफलता मिलेगी, धनागम होगा। तकनीकी परियोजनाओं से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता सफल और प्रसिद्ध होंगे। माता की स्पर्धियों पर विजय होगी, धनी बनेंगी, रोगनिरोधक क्षमता उत्तम होगी। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति की प्राप्ति, अप्रत्याशित परिवर्तन और विरासत से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा; पारिवारिक जीवन सुखद होगा, प्रसिद्धि मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी। व्यापारियों की यात्रा हो सकती है; खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लाल वस्त्र, मसूर और लाल चंदन का दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - राहु
(17/03/2029 - 11/08/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 11/08/2015 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 17/03/2029 को प्रारंभ होकर 11/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा। सट्टेबाजी आदि से अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। भौतिक सुख-साधन प्राप्त करने की इच्छा पूर्ण होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे; उनसे लाभ होगा। धन की कमी से बचने के लिए धन का सुनियोजित उपयोग आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा और संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, लंबी यात्रा और समाजसेवा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घर में सुख मिलेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी।
व्यापारियों को हर प्रकार से धनलाभ होगा।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले वस्त्र, उड़द
और सतनजा दान दें।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382